विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष : 5 अंक : 20 दिसंबर, 2012

कवि सम्मेलन एवं महाकवि निराला स्मृति समारोह

15 अक्टूबर, 2012 की शाम को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा मॉरीशस के वाक्वा स्थित सेर्ज़ कोंस्ताँतें सभागार में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि सम्मेलन एवं महाकवि निराला स्मृति समारोह का आयोजन किया गया । *शेष पृ. 2*

एच.डी.एफ़.सी बैंक द्वारा हिंदी में मोबाइल बैंकिंग शुरू

मोबाइल के माध्यम से बेंकिंग सुविधा प्रदान करने के लिए भारत का दूसरा सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का बैंक एच.डी.एफ़.सी. (हाउसिंग डिवलॉप्मेंट फ़ाइनेंस कोर्परेशन) ने अपने ग्राहकों के लिए हिंदी में मोबाइल ऐप्लिकेशन आरंभ किया है ताकि उन्हें बेंकिंग करने में अधिक सुविधा और स्वच्छंदता का अनुभव हो । *शेष पृ. 5*

अब ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में भी सिखाई जाएगी हिंदी

अब ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में भी हिंदी और अन्य प्रमुख एशियाई भाषाएँ पढ़ाई जाएँगी । शुरूआत स्कूलों, प्रशिक्षण केंद्रों से होगी । हर एक स्कूल एशिया के किसी स्कूल के साथ जुड़ेगा और एक प्रमुख एशियाई भाषा हिंदी, मंदारिन, जापानी या इंडोनेशियन सीखने की पहल करेगा। *शेष पृ. 4*

विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग से मॉरीशस का हिंदी साहित्य अब कविताकोश पर

वातायान पोएट्री सम्मान – 2012

लंदन के हाउस ऑफ़ लार्डस के हाल में बैरोनैस फ़्लैदर के संरक्षण में वातायान पोएट्री ऑन साउथ बैंक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया । वातायान संस्था 2004 से प्रति वर्ष भारत के एक कवि को उसकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए सम्मानित करती चली आ रही है । *शेष पृ. 5*

शंघाई अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाएगी हिंदी

भारत ने शंघाई स्थित चीन के लोकप्रिय विश्वविद्यालय के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है जिसके तहत इस शिक्षण संस्थान में हिंदी भाषा न्यास की स्थापना की जाएगी । यह चीन में तीसरा हिंदी भाषा न्यास होगा । *शेष पृ. 4*

कवि सम्मेलन एवं महाकवि निराला स्मृति समारोह

15 अक्टूबर, 2012 की शाम को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा मॉरीशस के वाक्वा स्थित सेर्ज़ कोंस्ताँतें सभागार में हिंदी दिवस के हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि सम्मेलन एवं महाकवि निराला स्मृति समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री सत्यदेव टेंगर, भारतीय उच्चायोग में शिक्षा एवं संस्कृति के द्वितीय सचिव श्री मीमांसक, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय के मेधा गणपत, कला एवं संस्कृति मंत्रालय में वरिष्ठ संस्कृति अधिकारी सुश्री अनुपमा चमन सहित मॉरीशस के कवि-कवयित्री उपस्थित थे ।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखला द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई जिन्होंने सभी अतिथियों व काव्य-पाठ में भाग लेने वालों का स्वागत करते हुए उन्हें उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद किया । इसके तुरंत बाद सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने स्वागत भाषण दिया । उन्होंने भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक हिंदी भाषा के बढ़ते कदमों पर बात की और कहा कि इस अवसर पर हिंदी जगत में निराला जी के अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है । निराला की रचनाओं पर भी अपने विचार सामने रखते हुए उन्होंने मॉरीशस के हिंदी साहित्य पर प्रकाश डालते हुए बताया निराला जी की रचनाओं को याद करते हुए मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों को भी प्रोत्साहन मिलता है । उन्होंने हर्ष के साथ यह सूचित किया कि मॉरीशसीय कवियों का अधिक प्रोत्साहन करते हुए उनकी रचनाओं को

दाएँ से डॉ.हेमराज सुन्दर, श्री धनराज शंभु, श्री राज हीरामन, श्री सत्यदेव टेंगर, श्रीमती कल्पना लालजी, डॉ.अलका धनपत, श्रीमती पूनम जुनेजा, श्रीमती मधु गजाधर, विनय गुदारी, वशिष्ठ झमन तथा अरविंदसिंह नेकितसिंह ।

कविता-कोश तथा सचिवालय के वेबसाइट पर डाली जाएँगी । यह पहल मॉरीशस हिंदी साहित्य को विश्व भर के पाठकों व हिंदी प्रेमियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से की जा रही है । अंत में उन्होंने सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ दी । इसके पश्चात श्रीमती पूनम जुनेजा ने श्री सत्यदेव टेंगर, सुश्री अनुपमा चमन, श्री मीमांसक एवं श्री मेधा गणपत को पुष्प-गुच्छ भेंट की ।

श्रीमती पूनम जुनेजा द्वारा श्री सत्यदेव टेंगर का पुष्प गुच्छ से सम्मान

महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग में वरिष्ठ व्याख्याता श्री कुमारदत्त गुदारी ने महाकवि निराला के जीवन पर एक पावर पॉइंट प्रस्तुति की जिसमें उनके जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व, प्रेरणा आदि मूल विषयों पर बहुत ही सारगर्भित रूप से उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए । महात्मा गांधी संस्थान में बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा ने निराला जी की प्रसिद्ध कविता *वह तोड़ती पत्थर* का पाठ किया ।

कवियों का शॉल एवं स्मृति चिह्न

काव्य-पाठ के शुरू होने से पूर्व, श्री सत्यदेव टेंगर ने स्मृति चिह्न प्रदान करके सभी कवि व कवयित्रीयों का सम्मान किया । उसके पश्चात काव्य-पाठ प्रारंभ हुआ । रसों, भावों और विभिन्न विषयों-विचारों से ढली कविताओं से सभागार गूँज उठा । युवा कवियों में कुमारदत्त गुदारी, अरविंदसिंह नेकितसिंह, वशिष्ठ कुमार झमन तथा जिष्णु हरिशरण ने अपनी कविताएँ सुनाईं । कवयित्रीयों में डॉ.अलका धनपत, श्रीमती कल्पना लालजी एवं श्रीमती मधु गजाधर रहीं । श्री राज हीरामन, धनराज शंभू एवं डॉ.हेमराज सुंदर जैसे प्रतिष्ठित कवियों ने भी अपनी कविताएँ सुनाईं ।

मौके पर हिंदी संगठन की महासचिव श्रीमती अंजू घरभरन, श्री बलवंतसिंह नौबतसिंह एवं श्रीमती संध्या नवसा अंचराज़ सहित अन्य हिंदी प्रेमी उपस्थित थे । कार्यक्रम के अंत में श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने कार्यक्रम को सफ़ल बनाने में सभी कवियों, अतिथियों व हिंदी-प्रेमियों को उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

उत्सव के केंद्र में तेजेंद्र

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण व संचालक

एशियन कम्यूनिटी आर्ट्स ने लंदन के नेहरू सेंटर में एक अनूठे कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें ब्रिटेन के हिंदी साहित्य का उत्सव मनाया गया । उत्सव के केंद्र में कथाकार तेजेंद्र शर्मा का लेखन रहा । इस कार्यक्रम में तेजेंद्र शर्मा की कहानी *एक ही रंग* की नाट्य प्रस्तुति भोपाल के मंच कलाकार ने की जिसका दर्शकों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया ।

तेजेंद्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर काउंसलर ज़ाकिया ज़ुबैरी, श्री कैलाश बुधवार एवं कथाकार हरि भटनागर ने अपने विचार श्रोताओं के साथ साझा किए । संचालक डॉ.निखिल कौशिक (वेल्स) ने एक सुंदर वीडियो फ़िल्म संपादित कर दर्शकों को दिखाई जिसमें भारत से राजेंद्र यादव, महीप सिंह, ममता कालिया, राहुल देव, ओम थानवी, प्रमोद कुमार तिवारी, अनिल जोशी, अलका सिन्हा एवं पत्रकार अजित राय के संदेश शामिल किए गए थे । प्रत्येक संदेश में तेजेंद्र शर्मा के बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में उद्‌गार प्रकट किए गए थे । राजेंद्र यादव ने तेजेंद्र शर्मा की कहानियों पर टिप्पणी करते हुए कहा, *''तेजेंद्र शर्मा मुख्यधारा के कहानीकार हैं और उनकी कहानियों ने हिंदी कहानी को नए कथानक दिए हैं ।''*

कार्यक्रम में चार पुस्तकों, तेजेंद्र शर्मा के नए कहानी संग्रह (दीवार में रास्ता–वाणी प्रकाशन), 13 साक्षात्कारों का संकलन (बातें-शिवना प्रकाशन, संपादक मधु अरोड़ा), तेजेंद्र शर्मा पर 25 आलोचनात्मक लेखों का संकलन (हिंदी की वैश्विक कहानी-अयन प्रकाशन, संपादक निना पॉल), रचना समय विशेषांक-(तेजेंद्र शर्मा की 12 कहानियाँ-संपादक हरि भटनागर) एवं एक ग़ज़ल सीडी जिसमें तेजेंद्र शर्मा की 8 ग़ज़लें शामिल की गई हैं-का विमोचन किया गया । शमील चौहान एवं संगीत बहादुर ने तेजेंद्र शर्मा की ग़ज़लें गाकर समां बांध दिया । उर्दू के लोकप्रिय शायर अक़ील दानिश ने तेजेंद्र शर्मा पर लिखी अपनी नज़्म का पाठ किया ।

श्रोताओं का स्वागत नेहरू सेंटर की निदेशक संगीता बहादुर ने किया और धन्यवाद ज्ञापन तेजेंद्र शर्मा ने किया । दर्शकों से खचाखच भरे नेहरू सेंटर के इस कार्यक्रम में भारतीय उच्चायोग के अधिकारी, काउंसलर, मीडिया एवं पत्रकारिता से जुड़ी हस्तियां, साहित्यकार, आदि मौजूद थे जिनमें श्रीमती पद्‌मजा, श्री एस.के.धामी, प्रो.दया थुस्सु, विजय राणा, नरेश कौशिक, मीरा कौशिक, शैल अग्रवाल, उषा राजे सक्सेना, के.बी.एल.सक्सेना, एस.एस.पांडेय, साथी लुधियानवी, काउंसलर के.सी.मोहन, काउंसलर सुनील चोपड़ा, रुख़साना रख़्शी, बासित अली, सोहन राही, भानु भाई पंडया, वेद मोहला, दयाल शर्मा, अयूब औलिया, शिखा वार्ष्णेय, विभाकर बख़्शी, अरुणा अजितसरिया, आदि शामिल थे ।

सृजनगाथा से साभार

वसंत और रिमझिम साहित्यिक प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह

महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन विभाग ने संस्थान के सुब्रमण्य भारती सभागार में एक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जिसमें 'वसंत और रिमझिम साहित्यिक प्रतियोगिता' के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । कार्यक्रम में भारतीय उच्चायोग में द्वितीय सचिव श्री मीमांसक, महात्मा गांधी संस्थान तथा रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान के निदेशक बिजय मधु, संस्थान के काउंसिल के अध्यक्ष रवींद्र द्वारका, हिंदी विभाग की डॉ.रेश्मी रामधोनी तथा सृजनात्मक लेखन विभाग के डॉ.हेमराज सुंदर उपस्थित थे ।

सृजनात्मक लेखन विभाग का मकसद है मॉरीशस के हिंदी साहित्य और सृजनात्मक लेखन को बढ़ावा देना । इसके मुख्य गतिविधियों में 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाओं का प्रकाशन भी शामिल है । ये पत्रिकाएँ नए लेखकों व कवियों को अपनी कला और खासकर लेखन को बढ़ावा देने का एक उपयुक्त मंच प्रदान करती हैं । हिंदी-लेखन और पठन के प्रति पाठकों की रुचि बढ़ाने के लिए साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं ।

भारतीय उच्चायोग में द्वितीय सचिव श्री मीमांसक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया – ''भारत खासकर उन देशों के साथ अपने संबन्ध मज़बूत बनाता जा रहा है जहाँ हिंदी बोली जाती है, जिस तरह मॉरीशस-भारत का गहरा संबन्ध है । 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रतीक हैं और इन्हें उचित सम्मान भी प्राप्त हो रहा है । अब समय आ गया है कि इन्हें इंटरनेट पर उतारा जाए ताकि इनकी पहुँच विश्व भर में अधिक से अधिक हिंदी प्रेमियों तक हो । क्योंकि आज हम एक ऐसे विश्व में जी रहे हैं जहाँ प्रौद्योगिकी काफ़ी प्रगति कर चुकी है ।''

'वसंत' पत्रिका विश्व के उन सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पत्रिकाओं में गिनी जाती है जो विश्व भर के हिंदी-भाषियों तक पहुँचती है और जिसमें अंग्रेज़ी, फ्रेंच, उर्दू, मराठी, तमिल, तेलुगू आदि भाषाओं की रचनाएँ हिंदी भाषा में प्रकाशित होती हैं । विभिन्न विषयों पर भी शोध-पत्र प्रकाशित होते रहते हैं । 'रिमझिम' खासकर नव-युवकों के लिए प्रकाशित होती है । प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के छात्रों के ज्ञान को बढ़ाने के लक्ष्य से इसके स्तर को बढ़ाया गया है । इसके विषय अधिक गहन बनाए गए हैं । इस अवसर पर नव-युवकों को हिंदी-लेखन के प्रति प्रोत्साहित करने के लक्ष्य से श्री मीमांसक द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए ।

> वस्तुत: हमारी मंज़िल सिर्फ हिंदी को प्रमुख भाषाओं में स्थान दिलाना नहीं होना चाहिए, बल्कि हमारी कोशिशें तो ये होनी चाहिए कि सभी देशों के लोग और सारी दुनिया के लोग भी हिंदी का महत्व समझें और हमारी तरह वे सब भी हिंदी को माँ सरस्वती के रूप में देखते हुए प्रणाम करें ।... यकीन मानिए, कामयाबी दूर नहीं ।
>
> ***अजय ओझा***

इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी : राजभाषा सेल होंगे स्थापित

मातृ भाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) राजभाषा सेल की स्थापना करने जा रही है । इग्नू अपने 56 क्षेत्रीय केंद्रों में यह सेल स्थापित करेगी जो कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की दिशा में काम करेंगी ।

यह सेल पांच सदस्यीय होगा जिसमें क्षेत्रीय निदेशक, सहायक निदेशक, को-ऑर्डिनेटर व स्टाफ़ से जुड़े लोग शामिल रहेंगे । इग्नू के कुलपति प्रो.गोपीनाथ प्रधान ने कहा कि इग्नू में यदि हिंदी की अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं होती है और अंग्रेज़ी में उपलब्ध होती है ।

ऐसे में भी विद्यार्थियों के पास यह विकल्प हमेशा रहता है कि वे टर्म-एंड परीक्षाओं में सवालों के जवाब हिंदी में दे सकते हैं । विश्वविद्यालय के इस कदम की राजभाषा सचिव शरद गुप्ता ने प्रशंसा की है ।

भास्कर.कॉम से साभार

शंघाई अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाएगी हिंदी

भारत ने शंघाई स्थित चीन के लोकप्रिय विश्वविद्यालय के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है जिसके तहत इस शिक्षण संस्थान में हिंदी भाषा न्यास की स्थापना की जाएगी । यह चीन में तीसरा हिंदी भाषा न्यास होगा । शंघाई स्थित भारतीय दूतावास की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, शंघाई में 29 अक्टूबर को चीन में भारत के राजदूत एस.जयशंकर और शंघाई इंटरनेश्नल स्टडीज़ विश्वविद्यालय के कार्यकारी उपाध्यक्ष फ़ेंग छिंघुआ ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए ।

हिंदी की शिक्षा के लिए पेकिंग विश्वविद्यालय और गुआंगदोंग फ़ोरेन यूनिवर्सिटी में भी ऐसे ही न्यास हैं । सहमति पत्र के अनुसार एक हिंदी प्रोफ़ेसर विश्वविद्यालय के साथ मिलकर हिंदी भाषा के शिक्षक की नियुक्ति करेगा । विज्ञप्ति के अनुसार, शंघाई इंटरनेश्नल स्टडीज़ विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा का पाठ्यक्रम सितंबर 2013 से शुरू होने की संभावना है । यह न्यास लंबी अवधि के लिए होगा जहाँ प्रोफ़ेसर छात्रों को पढ़ाने के साथ-साथ दो वर्ष के लिए शोध भी कराएँगे । शिक्षा को भारत और चीन के बीच सहयोग का महत्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है ।

प्रभात खबर से साभार

अब ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में भी सिखाई जाएगी हिंदी

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड ने एशियन सेंचुरी व्हाइट पेपर जारी करते हुए घोषणा की कि अब ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में भी हिंदी और अन्य प्रमुख एशियाई भाषाएँ पढ़ाई जाएँगी । गिलार्ड ने कहा कि शुरूआत स्कूलों, प्रशिक्षण केंद्रों से करनी होगी । हर एक स्कूल एशिया के किसी स्कूल के साथ जुड़ेगा और एक प्रमुख एशियाई भाषा हिंदी, मंदारिन, जापानी या इंडोनेशियन सीखने की पहल करेगा। उन्होंने कहा कि बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने की कोशिश करनी होगी । अब पहले जैसा नहीं चलेगा ।

गिलार्ड ने कहा कि इस सदी में एशिया एक बड़ी ताकत के रूप में उभर रही है । विश्व में यह क्षेत्र नेतृत्व की भूमिका में होगा । हाल में भारत की यात्रा से लौटीं गिलार्ड ने कहा कि एशिया को रोका नहीं जा सकेगा । योजना में एशिया से संबंधों को और मज़बूत बनाने की बात है, जिससे कि 2025 तक ऑस्ट्रेलिया दुनिया के दस दौलतमंद देशों में आ सके । अभी वह 13वें स्थान पर है ।

भारत और अन्य एशियाई देशों से संबंध मज़बूत बनाने के लिए यह रणनीति तय की गई है । गिलार्ड ने कहा कि 2025 तक एशिया में विश्व का सबसे बड़ा मध्यम वर्ग होगा । यह ऑस्ट्रेलिया के लिए अच्छी बात है । एशिया से अपने आर्थिक संबंधों के बारे में हमें गहराई से सोचना चाहिए । इसे हम अधिक कुशल और अधिक वेतन वाले ऑस्त्रेलिया का नया बाज़ार बना सकते है

पंजाब केसरी से साभार

विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग से मॉरीशस का हिंदी साहित्य अब कविताकोश पर

विश्व भर के साहित्य प्रेमियों तक मॉरीशस का अनुपम काव्य साहित्य पहुँचाने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय और कविताकोश के संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप मॉरीशस की हिंदी कविता की चयनित रचनाएँ अब कविताकोश.ऑर्ग (www.kavitakosh.org/mauritius) पर प्रकाशित हो रही हैं ।

योजना का प्रारंभ अप्रैल महीने में सचिवालय द्वारा आयोजित 'हिंदी आई.टी. कार्यशाला' के अंतर्गत हुई चर्चा से हुआ । कार्यशाला में पधारे कविताकोश के संस्थापक ललित कुमार तथा अनुभूति-अभिव्यक्ति की संपादक श्रीमती पूर्णीमा वर्मन ने चिंता व्यक्त की कि मॉरीशस के हिंदी रचनाकार वैश्विक फलक पर अपना पाठकवर्ग विस्तृत कर पाने के लिए इंटर्नेट पर उपलब्ध कविताकोश आदि साधनों का प्रयोग उपयुक्त मात्रा में नहीं कर पा रहे हैं ।

समस्या को परखते हुए विश्व हिंदी सचिवालय ने प्रस्ताव रखा कि मॉरीशस के रचनाकारों और कविताकोश आदि के मध्य सचिवालय मध्यतता का कार्यभार निभाए और इंटर्नेट पर साहित्यिक कोशों तक मॉरीशस का साहित्य पहुँचाए । कार्य आरंभ हुआ । कुछ झिझक और कुछ विघ्न का भी सामना करना पड़ा परंतु आज सचिवालय को यह घोषणा करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि मॉरीशस के लगभग 20 कवियों की लिखित अनुमति के साथ लगभग दो सौ चयनित रचनाएँ पुस्तकों के चित्र, कवियों का जीवनवृत और फ़ोटो आदि कविताकोश पर प्रकाशित किए जा चुके हैं ।

यह कार्य अभी जारी है और सचिवालय नए पुराने अन्य बीस से अधिक रचनाकारों और दर्जनों संकलनों से कविताओं का चयन जारी रख रहा है । इनमें ऐसी रचनाएँ भी हैं जो 100 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई हैं और जो आज बाज़ार में उपलब्ध नहीं हैं तथा ऐसी रचनाएँ भी जिनका कॉपिराइट संस्थाओं के पास है ।

सचिवालय का उद्देश्य है कि मॉरीशस (और लंबी अवधि में अन्य डायास्पोरा देशों) का नया पुराना साहित्य सचिवालय के वेबसाइट सहित नैट पर हर प्रसिद्ध कोश पर व्यवस्थित रूप से उपलब्ध कराया जाए और विश्व भर के हिंदी पाठक और शोधकर्ता इस साहित्य से परिचित हो पाएँ । इस संदर्भ में सचिवालय अन्य इंटरनेट काव्य कोशों के साथ भी समान संधियों के प्रयास में हैं ताकि यह साहित्य अन्य मंचों पर भी प्रकाशित हो सके ।

कविता कोश इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के काव्य के सबसे विशाल और सुव्यवस्थित संग्रहों में एक है जिस तक लाखों पाठकों की पहुँच है । इस विशाल मंच के साथ इस प्रकार के अन्य मंचों तक मॉरीशस और दक्षिण अफ़्रीका, फीजी, सुरीनाम आदि का दुर्लभ साहित्य पहुँचाने में सहयोग देने की सचिवालय की योजना में आप पाठकों के सहयोग की भी कामना है । आपके सुझाव और हर प्रकार का योगदान शिरोधार्य है ।

वातायन पोएट्री सम्मान – 2012

बैरोनैस फ्लैदर द्वारा सम्मान

5 नवंबर की शाम को लंदन के हाउस ऑफ़ लार्डस के हाल में बैरोनैस फ़्लैदर के संरक्षण में वातायान पोएट्री ऑन साउथ बैंक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। वातायान संस्था 2004 से प्रति वर्ष भारत के एक कवि को उसकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए सम्मानित करती चली आ रही है। पिछले वर्ष, इसी स्थान पर श्री प्रसून जोशी और जावेद अख्तर को शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया था।

इस समारोह में प्रसिद्ध कवि और लेखक श्री निदा फ़ाज़ली को वातायान शिखर पुरस्कार एवं मूलत: गुजराती कवि श्री शोभित देसाई को वातायान पुरस्कार से अलंकृत किया गया। इस सभा के अध्यक्ष थे कैंब्रिज के पूर्व प्राध्यापक और जाने-माने लेखक, डॉ.सत्येंद्र श्रीवास्तव। स्वर्गीय डॉ.गौतम सचदेव के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सभा में एक मिनट मौन रखा गया। साउथ एशियन सिनेमा फ़ैडेरेशन के संस्थापक श्री ललित मोहन जोशी ने इस कार्यक्रम के संचालन की बागडोर संभाली। यू.के हिंदी समिति के अध्यक्ष और पुरवाई के संपादक डॉ.पद्मेश गुप्त के स्वागत वक्तव्य और पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण से समारोह का शुभारंभ हुआ। लंदन में बसी स्वतंत्र पत्रकार और लेखिका शिखा वार्ष्णेय द्वारा सम्मान-पत्र के वाचन के पश्चात बैरोनेस श्रीला फ़्लैदर ने श्री शोभित देसाई को शॉल ओढ़ाई। डॉ.सत्येंद्र श्रीवास्तव ने

श्री देसाई को सम्मान-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए। इसके पश्चात प्रसिद्ध गायक राजन शगुन्शे और गायिका उत्तरा सुकन्या जोशी ने निदा फ़ाज़िली का गीत 'ये जो दुनिया है ये जादू का खिलौना है' प्रस्तुत किया। एन.आर.आई वेब-रेडियो एवं हेल्थ एंड हैपीनेस पत्रिका के संपादक और हिस्ट्री.कॉम के निर्माता विजय राणा के सम्मान पत्र के वाचन के पश्चात बैरोनेस फ़्लैदर ने निदा फ़ाज़िल को शॉल ओढ़ाकर उनका स्वागत किया और डॉ.सत्येंद्र श्रीवास्तव ने उन्हें सम्मान-पत्र और पुरस्कार प्रदान किए।

दूसरे सत्र के आरंभ में पाकिस्तानी विद्यार्थी मलाला यूसफ़ज़ाई को याद किया गया और उसके पश्चात यू.के हिंदी समिति के उन्नीसवें अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का शुभारंभ हुआ, जिसकी बागडोर स्वयं शोभित देसाई ने संभाली। स्थानीय कवि मोहन राणा, तितिक्षा शाह, चमनलाल चमन और सोहन राही ने अपनी दो-दो रचनाओं का पाठ किया ताकि निदा फ़ाज़ली को श्रोतागण अधिक से अधिक सुन सकें। निदा साहब के क़िस्से, कविताएँ और ग़ज़लें एक से बढ़कर एक थीं। अपने मरहूम पिता पर लिखी उनकी एक कविता ने

बैरोनैस फ्लैदर द्वारा सम्मान

श्रोताओं को बहुत प्रभावित किया, जिसकी अंतिम पंक्तियाँ हैं- *तुम्हारी क़ब्र में मैं दफ़न हूँ, तुम मुझमें ज़िंदा हो।*

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ.सत्येंद्र श्रीवास्तव ने जवाहरलाल नेहरू से संबंधित एक घटना सुनाई कि पिक्केडल्ली से गुज़रते वक्त नेहरू जी एक बार पोएट्री सोसाइटी के दफ़्तर के सामने रुककर बोले कि क्या ही अच्छा हो कि यहाँ भारतीय कवि भी अपना कविता-पाठ कर पाएँ। उनका सपना सच हुआ; आज भारतीय कवि हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स में कविता पाठ करने में सक्षम है। यह गर्व और हर्ष का विषय है कि वातायान संस्था भारतीय कवियों को वैश्विक मंच दे रही है। अंत में मेज़बान बैरोनैस फ़्लैदर एवं वातायान की संस्थापक और जानी-मानी लेखिका दिव्या माथुर ने सभी मेहमानों का हृदय से धन्यवाद किया। समारोह में लंदन की कई सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के अलावा साहित्य और पत्रकारिता से जुड़े अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। यह शाम अपने आप में एक अविस्मरणीय शाम रही और श्रोताओं की तालियों से हॉल लगातार गूंजता रहा। जाने-माने पत्रकारों में शामिल थे श्री सी.बी.पटेल (गुजरात समाचार, एशियन वॉइस), रवि शर्मा (सनराइज़ रेडियो), ध्रुव गधवी (ज़ी.टी.वी), कुलदीप भारद्वाज (एम.ए टी.वी), स्काइलार्क के संपादक डॉ.योगेश पटेल आदि।

अभिव्यक्ति से साभार

एच.डी.एफ़.सी बैंक द्वारा हिंदी में मोबाइल बेंकिंग शुरू

भारत में लगभग 56.5 करोड़ हिंदी-भाषी हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए तथा मोबाइल के माध्यम से बेंकिंग सुविधा प्रदान करने के लिए भारत का दूसरा सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का बैंक एच.डी.एफ़.सी. (हाउसिंग डिवलॉप्मेंट फ़ाइनेंस कोर्परेशन) ने अपने ग्राहकों के लिए हिंदी में मोबाइल ऐप्लिकेशन आरंभ किया है ताकि उन्हें बेंकिंग में अधिक सुविधा और स्वच्छंदता का अनुभव हो। इस बैंक ने हिंदी ऐस.एम.ऐस बैंकिंग सुविधा भी आरंभ की है जो किसी भी मॉडल के मोबाईल से हासिल की जा सकती है। इससे हिंदी-भाषी क्षेत्रों के भारतीयों को बैंकिंग की सुविधा होगी। आज 82 प्रतिशत ग्राहक-ट्रैंसैक्शन प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही संपन्न होती है। इसका लक्ष्य है प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्राहकों को बेहतर सुविधा प्रदान करना और उनके और करीब आना।

इस औज़ार से प्रयोक्ता अपने ऐंड्रॉइड स्मार्टफ़ोन से हिंदी मोबाइल बैंकिंग में प्रवेश कर विभिन्न सुविधाएँ हासिल कर पाएँगे। साथ ही वे 30 से भी अधिक ट्रैंसैक्शन कर पाएँगे - खाते की सूचनाएँ, बिल चुकाना, निधि स्थानांतरण आदि। हिंदी ऐस.एम.ऐस बैंकिंग में भी 10 से भी अधिक बैंकिंग ट्रैंसैक्शन सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

नेहा पांडे देवरस

'हिंदी चेतना' के संस्थापक एवं मुख्य संपादक श्री श्याम त्रिपाठी को सरस्वती सम्मान

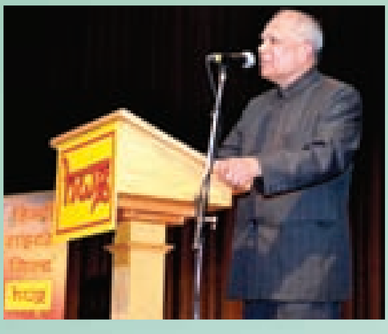

श्री श्याम त्रिपाठी का वक्तव्य

अक्टूबर 2012 को मिसिसागा स्थित पोर्ट क्रेडिट सैकेंडरी स्कूल के सभागार में हिंदी राइटर्स गिल्ड का चौथा वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। हर वर्ष इस उत्सव के लिए एक मुख्य विषय चुना जाता है और पूरा कार्यक्रम उसपर आधारित होता है। इस वर्ष के कार्यक्रम में साहित्य की विभिन्न विधाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम का आरंभ मानोशी चैटर्जी द्वारा सुमधुर सरस्वती वंदना से हुआ। संचालिका लता पांडे ने दर्शकों, मुख्य अतिथियों और अन्य गणमान्य लोगों का स्वागत करते हुए हिंदी राइटर्स गिल्ड की गत वर्ष की मुख्य गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विधु शेखर झा, जो कि न केवल मैनीटोबा के एमपीपी हैं बल्कि एक सिद्धस्त लेखक और कवि भी हैं, का मंच पर सम्मान किया गया। विधु जी ने हिंदी राइटर्स गिल्ड के प्रयासों की सराहना करते हुए जीवन में भाषा के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि *हिंदी में संकीर्ण विचारधारा को छोड़कर विदेशी भाषा के शब्दों को भी अपनाना चाहिए ताकि भाषा का विकास होता रहे* परंतु साथ ही बलपूर्वक कहा कि *भाषा को प्रदूषित न होने दें*। उदाहरण देते हुए *इंटरनेट* शब्द को स्वीकार और बात-बार पर *बिकॉज़* अस्वीकार करने को कहा। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण *रश्मिरथी* पर आधारित नाटक पर बोलते हुए उन्होंने स्व.रामधारी सिंह दिनकर के साथ कुछ व्यक्तिगत अनुभव बांटे और *रश्मिरथी* के प्रति अपना प्रेम दर्शाते हुए इसके कुछ अंश प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम में हिंदी के लिए समर्पित और नि:स्वार्थ सहायता करने वालों, एमपीपी दीपिका दामेर्ला, *हिंदी टाइम्स* के प्रमुख राकेश तिवारी और *स्टार बज़्ज़ मीडिया ग्रुप* के प्रमुख भूपिंदर विरदी को सम्मानित किया गया। दीपिका जी ने भारत में आधुनिक परिवेश में हिंदी को निम्नवर्ग की भाषा की अवधारणा की निंदा करते हुए कहा कि हमें इस मनोवृत्ती के प्रति सजग रहना होगा और उन्होंने आशा

उपस्थित दर्शकगण

व्यक्त की कि वह हिंदी राइटर्स गिल्ड के साथ जुड़ी रहेंगी। भूपिंदर जी ने हिंदी राइटर्स गिल्ड की सराहना की। राकेश तिवारी जी ने हिंदी राइटर्स गिल्ड के संगठन में समानता के महत्व की सराहना की और कहा कि वह हर प्रयास से संस्था की सहायता के लिए तैयार है।

अगले चरण में कैनेडा से प्रकाशित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका *हिंदी चेतना* के संस्थापक एवं मुख्य संपादक श्री श्याम त्रिपाठी जी को सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान हिंदी की नि:स्वार्थ सेवा करने वालों को प्रदान किया जाता है और त्रिपाठी जी इसके पाने वाले दूसरे हिंदी सेवी हैं।

कार्यक्रम के साहित्यिक चरण का संचालन श्रीमती भुवनेश्वरी पांडे ने किया।

टोरंटो में पहली बार किसी मंच से दो लघुकथाएँ पढ़ी गईं। पहली लघुकथा *ऊँचाई* रामेश्वर काम्बोज हिमांशु जी की थी और दूसरी लघुकथा सुमन कुमार घई की *विवशता* थी। सुरेंद्र शर्मा, काका हाथरसी और ओम प्रकाश आदित्य की हास्य-व्यंग्य कविताओं का पाठ क्रमश: निर्मल सिद्ध, पाराशर गौड़ और संजीव अग्रवाल ने किया। इसके पश्चात बच्चों ने अपनी संगीत कला प्रदर्शित किया। उमंग सक्सेना ने बांसुरी का शास्त्रीय वादन किया और अर्जुन पांडे ने अपनी कला तबले पर दिखलाई। कार्यक्रम के प्रथम भाग की अंतिम प्रस्तुति में मानोशी चैटर्जी ने गीतांजली के दो अंशों के हिंदी अनुवाद का भावपूर्ण काव्यपाठ किया। इसके पश्चात ***रश्मिरथी*** पर बहुत ही भावपूर्ण और कुशलता के साथ नाटक का मंचन हुआ। एक घंटे के इस नाटक में पता नहीं चला कि समय कब बीत गया। इसके बाद सभा के विसर्जन में धन्यवाद ज्ञापन विजय विक्रांत ने दिया।

सुमन कुमार घई

आधारशिला द्वारा मॉरीशस में हिंदी सम्मेलन

पिछले 29 अक्टूबर से 3 नवंबर 2012 तक नैनिताल, भारत के आधारशिला साहित्यिक मंडली ने मॉरीशस की यात्रा की। इसके 32 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान में एक मिनी हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जिसका प्रतिनिधित्व भारत के भूतपूर्व मंत्री तथा मौजूदा सांसद श्री भगतसिंह कोश्यारी, सांसद, पूर्व मुख्य मंत्री, अध्यक्ष याचिका समिति, राज्य सभा, भारत, कर रहे थे। आयोजक डॉ. दिवाकर भट्ट के साथ-साथ भारत के कोने-कोने से विद्वान, प्रोफ़ेसर, इन्कॉम टैक्स के अधिकारी, अमर उजाला के संपादक भी इस प्रतिनिधि मंडल में शामिल थे।

30 अक्टूबर को महात्मा गांधी संस्थान, मोका में मॉरीशस गणराज्य के कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी ने इस हिंदी सम्मेलन तथा भारतीय रंगकारों द्वारा रंगे चित्र-प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया। जहाँ मंत्री सहित डॉ.भट्ट, महात्मा गांधी संस्थान के श्री रवींद्र द्वारका, श्री बिजय मधु तथा अन्य विद्वानों के वक्तव्य हुए।

इसी उत्सव के दौरान आधारशिला ने मंत्री मुकेश्वर चुनी, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय मधु और दो स्थानीय हिंदी साहित्यकारों –रामदेव धुरंधर और राज हीरामन को उनकी हिंदी सेवा और योगदान के किए विश्व हिंदी रत्न से सम्मानित किया।

उप प्रधान एवं मूल ढांचा मंत्री श्री अनिल कुमार बेचू को भी एक अन्य अवसर पर हिंदी सम्मान प्रदान किया गया। आधारशिला प्रतिनिधि मंडल ने पहली नवंबर को स्टेट हाउस में मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति श्री कैलाश प्रयाग से रस्मे मुलाकात की। उसी दिन को प्रतिनिधि मंडल का स्वागत हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति ने किया।

2 नवंबर को महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग तथा आधारशिला के कुछ 15 विद्वानों ने एक कार्यशाला लगाई जिसमें भारत के प्रतिनिधि मंडल ने अपने शोध पत्र पढ़े।

राज हीरामन की रिपोर्ट

दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन
विद्रोहिणी शबरी का लोकार्पण एवं चर्चा गोष्ठी

गणमान्य अतिथियों द्वारा 'विद्रोहिनी शबरी' का लोकार्पण

नवंबर में लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार व भाषाविद् डॉ.हीरालाल बाछोतिया की सद्य प्रकाशित खंडकाव्य विद्रोहिणी शबरी का लोकार्पण दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन सभाकक्ष में किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री डॉ.श्यमसिंह शशि ने की। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई के उच्च अध्ययन एवं शोध संस्थान के कुलसचिव डॉ.दिलीप सिंह, समकुलपति प्रो.नीरलकट्टी, हिंदी प्रचारक प्रो.पार्थसारथी तथा सभा की आंध्र प्रदेश इकाई की अध्यक्षा प्रो.सीतालक्ष्मी, सुप्रसिद्ध अनुवादविद् डॉ.एच.बालसुब्रमण्यं, सुपरिचित गीतकार डॉ.राजेंद्र मिलन, शिक्षाशास्त्री डॉ.रामजन्म शर्मा तथा कवि डॉ.इंद्र सेंगर के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह का संयोजन डॉ.हरिसिंह पाल ने किया। अतिथियों का स्वागत दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेशचंद्र शर्मा, उपाध्यक्ष श्री अरुण वर्मन, *आथर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया* के महासचिव श्री शिवशंकर अवस्थी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय के उपनिदेशक श्री उमाकांत खुबालकर, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ.मुकेश अग्रवाल, कानूनविद् डॉ.जनकराज जय, वैज्ञानिक डॉ.चेतन कुमार, कवि सुनहरीलाल वर्मा और प्रवीण व्यास ने किया।

सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ.राजेंद्र मिलन की सुमधुर सरस्वती वंदना से शुरू हुए कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह शशि तथा अन्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा ***विद्रोहिणी शबरी*** का लोकार्पण किया गया। सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ.हरिसिंह पाल ने लोकार्पित कृति पर चर्चा का शुभारंभ करते हुए कहा कि यह काव्य कृति नारी सशक्तिकरण और अरण्य संस्कृति के संरक्षण की दिशा में एक नई पहल है। गीतकार डॉ.राजेंद्र मिलन ने काव्य और शिल्प की दृष्टि से इस कृति को हिंदी काव्य की अनुपम कृति बताया। मलयालम और तमिल के साहित्यकार डॉ.एच.बालसुब्रमण्यं ने इस कृति को उत्तर और दक्षिण की संस्कृति के सुंदर समन्वय की महत्वपूर्ण कड़ी स्वीकार किया। डॉ.इंद्र सेंगर ने कृति की विस्तृत व सारगर्भित समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि दृष्टि से यह एक खंड काव्य है या सात बड़ी कविताओं का एक स्तरीय संकलन तथा उन्होंने कहा कि इस कृति में भाषा, काव्य शिल्प और काव्य के आधार पर स्त्री पात्र की नई व्याख्या नए सिरे से की गई है। डॉ.रामजन्म शर्मा ने इस कृति की आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए शबरी की नवधा भक्ति की व्याख्या की। मुख्य अतिथि प्रो.दिलीप सिंह ने इस काव्य कृति को हिंदी की खंडकाव्य परंपरा की महत्वपूर्ण कृति स्थापित किया तथा उन्होंने कहा कि इसकी भाषा सरल होते हुए अत्यंत भाव संकुल है। *शबरी ने इसी अतीत तिमिर के खिलाफ़ चिंगारी सौलगाई, चटचटाती हुई यह थी हिंसा को नकारने की अगुआई*। इस अंश में *चटचटाती* के द्वारा चिंगारी की विकरालता प्रकट करना कवि का प्राप्तव्य है। यह शिल्प बद्ध कविता का उत्कृष्ट नमूना है। प्रो.कट्टी ने इस समारोह की प्रशंसा करते हुए कहा कि हिंदी का विकास इसी प्रकार के आयोजनों से संभव हो सकेगा। आपने इस कृति के रचयिता डॉ.बाछोतिया को इस कृति से प्रनयन के लिए साधुवाद दिया। समारोह के अध्यक्ष डॉ.शशि ने कृति के उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए रचनाकार को बधाई दी।

इस अवसर पर रचनाकार डॉ.बाछोतिया ने सभी अतिथियों को उत्तरीय उढ़ाकर सम्मानित किया। कवि सुनहरीलाल वर्मा एवं प्रवीण व्यास ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रो.सोमदत्त दीक्षित ने रचनाकार को बधाई दी तथा दक्षिण के हिंदी साहित्य सेवियों की उपस्थिति के प्रति आभार व्यक्त किया।

नवीन झा की रिपोर्ट

'आशीर्वाद' की ओर से 24 घंटे का कवि सम्मेलन

शनिवार 13 अक्टूबर, 2012 शाम 4 बजे से रविवार 14 को 4 बजे तक मुंबई महानगरी में सफ़लता एक कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें 'आशीर्वाद' के अध्यक्ष श्री बृजमोहन अग्रवाल तथा जे.पी.बघेल का सहयोग रहा। इस कार्यक्रम के आठ सत्रों में लगभग 200 कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं। खन्ना मुज़फ्फरपुरी, श्री अरविंद राही, संतोष श्रीवास्तव, अनंत श्रीमती, युवराज जैन और आलोक भट्टाचार्य ने कार्यक्रम का सफ़ल संचालन बारी-बारी से किया और रात भर काव्य-पाठ चलता रहा। कार्यक्रम के अंत में कवियों का प्रशस्ति-पत्र तथा शॉल-सुमन के साथ सत्कार किया गया। कार्यक्रम में श्री गिरिजाशंकर त्रिवेदी, देवी नागरानी सहित कई लोगों ने भाग लिया।

देवी नागरानी

दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन
विद्रोहिणी शबरी का लोकार्पण एवं चर्चा गोष्ठी

नवंबर में लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार व भाषाविद् डॉ.हीरालाल बाछोतिया की सद्य प्रकाशित खंडकाव्य विद्रोहिणी शबरी का लोकार्पण दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन सभाकक्ष में किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री डॉ.श्यमसिंह शशि ने की। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई के उच्च अध्ययन एवं शोध संस्थान के कुलसचिव डॉ.दिलीप सिंह, समकुलपति प्रो.नीरलकट्टी, हिंदी प्रचारक प्रो.पार्थसारथी तथा सभा की आंध्र प्रदेश इकाई की अध्यक्षा प्रो.सीतालक्ष्मी, सुप्रसिद्ध अनुवादविद् डॉ.एच.बालसुब्रमण्यं, सुपरिचित गीतकार डॉ.राजेंद्र मिलन, शिक्षाशास्त्री डॉ.रामजन्म शर्मा तथा कवि डॉ.इंद्र सेंगर के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह का संयोजन डॉ.हरिसिंह पाल ने किया। अतिथियों का स्वागत दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेशचंद्र शर्मा, उपाध्यक्ष श्री अरुण वर्मन, *आथर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया* के महासचिव श्री शिवशंकर अवस्थी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय के उपनिदेशक श्री उमाकांत खुबालकर, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ.मुकेश अग्रवाल, कानूनविद् डॉ.जनकराज जय, वैज्ञानिक डॉ.चेतन कुमार, कवि सुनहरीलाल वर्मा और प्रवीण व्यास ने किया।

सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ.राजेंद्र मिलन की सुमधुर सरस्वती वंदना से शुरू हुए कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह शशि तथा अन्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा ***विद्रोहिणी शबरी*** का लोकार्पण किया गया। सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ.हरिसिंह पाल ने लोकार्पित कृति पर चर्चा का शुभारंभ करते हुए कहा कि यह काव्य कृति नारी सशक्तिकरण और अरण्य संस्कृति के संरक्षण की दिशा में एक नई पहल है। गीतकार डॉ.राजेंद्र मिलन ने काव्य और शिल्प की दृष्टि से इस कृति को हिंदी काव्य की अनुपम कृति बताया। मलयालम और तमिल के साहित्यकार डॉ.एच.बालसुब्रमण्यं ने इस कृति को उत्तर और दक्षिण की संस्कृति के सुंदर समन्वय की महत्वपूर्ण कड़ी स्वीकार किया। डॉ.इंद्र सेंगर ने कृति की विस्तृत व सारगर्भित समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि दृष्टि से यह एक खंड काव्य है या सात बड़ी कविताओं का एक स्तरीय संकलन तथा उन्होंने कहा कि इस कृति में भाषा, काव्य शिल्प और काव्य के आधार पर स्त्री पात्र की नई व्याख्या नए सिरे से की गई है। डॉ.रामजन्म शर्मा ने इस कृति की आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए शबरी की नवधा भक्ति की व्याख्या की। मुख्य अतिथि प्रो.दिलीप सिंह ने इस काव्य कृति को हिंदी की खंडकाव्य परंपरा की महत्वपूर्ण कृति स्थापित किया तथा उन्होंने कहा कि इसकी भाषा सरल होते हुए अत्यंत भाव संकुल है। *शबरी ने इसी अतीत तिमिर के खिलाफ़ चिंगारी सौलगाई, चटचटाती हुई यह थी हिंसा को नकारने की अगुआई*। इस अंश में *चटचटाती* के द्वारा चिंगारी की विकरालता प्रकट करना कवि का प्राप्तव्य है। यह शिल्प बद्ध कविता का उत्कृष्ट नमूना है। प्रो.कट्टी ने इस समारोह की प्रशंसा करते हुए कहा कि हिंदी का विकास इसी प्रकार के आयोजनों से संभव हो सकेगा। आपने इस कृति के रचयिता डॉ.बाछोतिया को इस कृति से प्रनयन के लिए साधुवाद दिया। समारोह के अध्यक्ष डॉ.शशि ने कृति के उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए रचनाकार को बधाई दी।

गणमान्य अतिथियों द्वारा 'विद्रोहिनी शबरी' का लोकार्पण

इस अवसर पर रचनाकार डॉ.बाछोतिया ने सभी अतिथियों को उत्तरीय उढ़ाकर सम्मानित किया। कवि सुनहरीलाल वर्मा एवं प्रवीण व्यास ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रो.सोमदत्त दीक्षित ने रचनाकार को बधाई दी तथा दक्षिण के हिंदी साहित्य सेवियों की उपस्थिति के प्रति आभार व्यक्त किया।

नवीन झा की रिपोर्ट

'आशीर्वाद' की ओर से 24 घंटे का कवि सम्मेलन

शनिवार 13 अक्टूबर, 2012 शाम 4 बजे से रविवार 14 को 4 बजे तक मुंबई महानगरी में सफ़लता एक कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें 'आशीर्वाद' के अध्यक्ष श्री बृजमोहन अग्रवाल तथा जे.पी.बघेल का सहयोग रहा। इस कार्यक्रम के आठ सत्रों में लगभग 200 कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं। खन्ना मुज़फ्फरपुरी, श्री अरविंद राही, संतोष श्रीवास्तव, अनंत श्रीमती, युवराज जैन और आलोक भट्टाचार्य ने कार्यक्रम का सफ़ल संचालन बारी-बारी से किया और रात भर काव्य-पाठ चलता रहा। कार्यक्रम के अंत में कवियों का प्रशस्ति-पत्र तथा शॉल-सुमन के साथ सत्कार किया गया। कार्यक्रम में श्री गिरिजाशंकर त्रिवेदी, देवी नागरानी सहित कई लोगों ने भाग लिया।

देवी नागरानी

साहित्य मंडल द्वारा सम्मान समारोह

कृष्ण कुमार यादव को सम्मान

पिछले दिनों राजस्थान की प्रसिद्ध साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह के दौरान अनेक हिंदी सेवियों व संपादकों को सम्मानित किया गया। दिल्ली से मैत्री-भाईचारे के प्रचार-प्रसार व साहित्यकारों को अनेक उपयोगी सूचनाएँ प्रदान करने में विगत 10 वर्षों से निरंतर संलग्न पत्रिका *हम सब साथ-साथ* की संपादक श्रीमती शशि श्रीवास्तव को *संपादक रत्न* की उपाधि से विभूषित किया गया। युवा साहित्यकार व चर्चित ब्लॉगर एवं इलाहबाद परिप्रेक्ष्य के निदेशक, डाक सेवाएँ, कृष्ण कुमार यादव को विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता और ओर प्रशासन के साथ-साथ सतत साहित्य सृजनशीलता हेतु *श्रीमती सरस्वती सिंहजी सम्मान* से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार प्रो.सूर्यप्रसाद दीक्षित, हास्य-व्यंग्य लेखक प्रेम जनमेजय, आचार्य डॉ.राम गोपाल शर्मा, भारतेंदु परिवार के प्रपौत्र व भूगर्भ शास्त्र अध्येयता प्रो.गिरीश चंद्र चौधरी को भी सम्मानित किया गया।

श्रीमती शशि श्रीवास्तव संपादक रत्न की उपाधि से विभूषित

रत्नेश मौर्य की रिपोर्ट

डॉ.सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के नाटक वचनबद्ध का पाठ

स्वराज भवन सभागार में 'संवाद' के अंतर्गत निराला सृजनपीठ द्वारा डॉ.सुरेश शुक्ल के प्रसिद्ध नाटक 'वचनबद्ध' का पाठ आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बाल साहित्यकार डॉ.परशुराम शुक्ल ने की। कार्यक्रम का संचालन निराला सृजनपीठ के निदेशक श्री दिवाकर वर्मा ने किया।

इस कार्यक्रम में श्रीमती जयाकेतकी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री सुरेश शुक्ल का साधुवाद किया और कहा कि उनके इस नाटक से कैकेई के वास्तविक चरित्र की जानकारी मिली। अपने वक्तव्य में श्रीमती अजिता तिवारी ने कैकेई के गुणों की व्याख्या की और देश के प्रति उसके समर्पण को विस्तार से बताया। अपने अध्यक्षीय उद्‍बोधन में डॉ.परशुराम शुक्ल ने कहा कि आज समाज को डॉ.सुरेश शुक्ल जैसे नाटककारों की आवश्यकता है।

इस अवसर पर राम अधीर, मोहन तिवारी, जहीर कुरैशी, श्याम बिहारी सक्सेना, साधना बलवटे आदि अनेक साहित्यकार उपस्थित थे। ज्ञात हो कि नाटक 'वचनबद्ध' उत्तरप्रदेश संगीत एवं नाटक अकादमी द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'छायानट' के 134वें अंक में छपा है।

जयाकेतकी की रिपोर्ट

अक्षरा द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन

साहित्यिक संस्था 'अक्षरा' के तत्वावधान में कम्पनी बाग, मुरादाबाद स्थित प्रेस क्लब सभागार में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ तथा स्व. श्री देवराज वर्मा की पुण्य स्मृति में उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसके पश्चात आयोजित सम्मान में झज्जर (हरियाणा) के चर्चित युवा कवि श्री राकेश 'मधुर' को निर्णायक मंडल द्वारा चयनित उनकी काव्यकृति 'चाँद को सअब पता है' के लिए 'देवराज वर्मा उत्कृष्ट साहित्य सृजन सम्मान – 2012' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संस्था के संयोजक योगेंद्र वर्मा ने कहा कि 'सम्मान प्रक्रिया के अंतर्गत लगभग 35 साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित सम्मान हेतु प्रविष्टि आमंत्रण विषयक विज्ञप्ति के क्रम में 8 राज्यों से कुल 28 काव्य-कृतियाँ प्राप्त हुईं जिनमें सर्वोत्कृष्ट काव्यकृति के चयन हेतु गठित निर्णायक मंडल द्वारा युवा कवि श्री राकेश 'मधुर' की काव्यकृति चाँद को सब पता है' का सम्मान हेतु चयन किया गया।' कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार श्री माहेश्वर तिवारी ने कहा कि 'मधुर' की कविताएँ भाषाई सहजता और बिंबों की ताज़दी की चाशनी में पगी हुई होती है।' मुख्य अतिथि श्री मधुकर अष्ठाना ने कहा कि 'मधुर' की रचनाधर्मिता में समाज के सांस्कृतिक संकट की फ़िक्र साफ़ झलकती है।' इस प्रकार श्री अनुराग गौतम, डॉ.स्वदेश भटनागर आदि साहित्यकारों ने अपने विचार वयक्त किए। कार्यक्रम में कवि राकेश 'मधुर' ने अपनी कविताएँ भी पढ़ीं। सम्मान समारोह में राम दत्त द्विवेदी, राजेश भारद्वाज, मनोज, अशोक विश्नोई, वीरेन्द्र सिंह ब्रजवासी सहित कई गणमान्य अतिथि उपसथित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.कृष्ण कुमार 'नाज़' ने किया। आभार अभिव्यक्ति योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' ने प्रस्तुत की।

योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' की रिपोर्ट

डॉ.प्रतिभा राय को ज्ञानपीठ पुरस्कार

भारत की प्रमुख फ़िक्शन लेखकों में शामिल वरिष्ठ उड़िया लेखिका डॉ.प्रतिभा राय को वर्ष 2011 के लिए 47 वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

ज्ञानपीठ द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार ज्ञानपीठ चयन बोर्ड की बैठक में डॉ.प्रतिभा राय को वर्ष 2011 के लिए 47वां ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा की गई। डॉ.प्रतिभा राय का जन्म 21 जनवरी, 1943 को कटक ज़िले में हुआ था। वे इस वक्त देश की प्रमुख फ़िक्शन लेखकों में शामिल हैं और उनके उपन्यास एवं कहानियां किस्सागोई की परंपरा से जुड़े होते हैं, जिसमें चरित्र और परिस्थितियां जीवंत हो जाती हैं।

डॉ.प्रतिभा राय के अब तक 20 उपन्यास, 24 लघुकथा संग्रह, 10 यात्रा वृतांत, दो कविता संग्रह और कई निबंध प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें यज्ञनासैनी, शिल पदम, महामोह, उत्तर मार्ग और द्रोपदी शामिल हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं का हिंदी सहित भारत की प्रमुख भाषाओं में और अंग्रेज़ी सहित दूसरी विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

हिंदी वेबदुनिया

नायपॉल और चेतन भगत अब हिंदी में

पेंग्विन ने कई बड़े लेखकों की पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित की है ।

"ऊपर चढ़ते हुए बहराम को सीढ़ी बेहिसाब लगी थी... वो नहीं जानता था कि ऐसा कश्ती की खड़खड़ाहट की वजह से है या फिर उसके दिमाग का चक्कर... "

पेंग्विन ने कई बड़े लेखकों की पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित की है ।

जाने माने लेखक अमिताभ घोष की पुस्तक River Of Smoke की ये पंक्तियाँ हो सकता है आपने अंग्रेज़ी में पढ़ी हो लेकिन अब आप इन्हें हिंदी में भी पढ़ सकते हैं ।

सिर्फ अमिताभ घोष की ही नहीं, नोबल पुरस्कार से सम्मानित वि.एस.नायपॉल और इतिहासकार रामचंद्र गुहा की पुस्तकें भी अब हिंदी में आ रही हैं । इतना ही नहीं चेतन भगत और लोकप्रिय लेखक रविंदर सिंह की पुस्तकों का भी हिंदी में बाज़ार बन रहा है । लेकिन कया कारण है कि अंग्रेज़ी के ये बड़े लेखक हिंदी में अपनी पुस्तकों का प्रकाशन चाहते हैं ।

रामचंद्र गुहा

"मेरी पुस्तक में कई प्रादेशिक नेताओं का भी ज़िक्र है । उनके बारे में लिखा है तो मैं चाहता था कि राज्यों के लोग भी पढ़ें । ये तमिल, कन्नड़ में भी प्रकाशित हुई है । मेरे मन में शुरू से था कि ये किताब हिंदी में छपे, मेरी एक अन्य किताब 18-20 साल पहले भी हिंदी में छपी थी ।"

ये बात सही है कि एक बड़ा पाठक वर्ग मिलता है लेकिन नोबल विजेता नायपॉल के लिए क्या आवश्यकता है हिंदी में अनूदित होने की ? प्रकाशक कहते हैं कि लेखक चाहे जितना बड़ा हो, वह चाहता है कि अधिक से अधिक लोग उसे पढ़ें ।

हिंदी का पाठक वर्ग बड़ा

अमिताभ घोष ने कहा, "हर कथाकार चाहता है कि उसे अधिक से अधिक लोग पढ़ें । मैं हिंदी बोलता हूँ, समझता हूँ तो मुझे बहुत खुशी हुई जब हिंदी में पुस्तक आई । मुझे पता चला कि पुस्तकें हिंदी में भी बहुत बिकी हैं । मेरी पुस्तकों के अनुवादक नवेद अकबर ने बेहतरीन काम किया है । मेरी आने वाली पुस्तकें भी

हिंदी में आ सकती हैं और कुछ पुरानी पुस्तकें भी ।"

चाहे अमिताभ हो, नायपॉल हो या फिर रामचंद्र गुहा, इनकी पुस्तकें भारत से जुड़ी हैं । भारतीय माहौल से जुड़ी हैं और निश्चित रूप से इनका नाम बड़ा है । ऐसे में कई बार ऐसा होता है कि लोग इनकी पुस्तकें अंग्रेज़ी में समझ नहीं पाते या उससे जुड़ाव नहीं हो पाता ।

अमिताभ घोष कहते हैं : "मेरा जितना संवाद हिंदी से हो सकता है, उतना अंग्रेज़ी से हमारा नहीं हो सकता । ये जीवन भर ऐसा ही रहेगा । जो अच्छी पुस्तकें हैं वे हिंदी में तो आनी ही चाहिए । मैंने राम गुहा वाली पुस्तक अंग्रेज़ी में पढ़ी तो उतना संबंध नहीं बन पाया । हिंदी में जल्दी पढ़ पाए और अपने आपको जोड़ भी पाए उस पुस्तक से ।"

स्वप्निल कहते हैं कि इंटरनेट के कारण हिंदी का प्रसार बढ़ा है और हिंदी के पाठकों को भी अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के साहित्य में रुचि है और वो अनुदित पुस्तकें खूब पढ़ते हैं । ज़ाहिर है अपनी मातृभाषा में पढ़ने का आनंद ही कुछ और है ।

दिक्कतें भी हैं

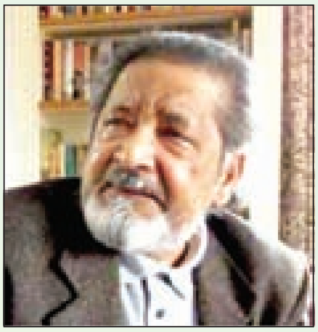

राम गुहा कहते हैं, "दो दिक्कतें हैं । एक तो प्रकाशक मिलना, क्योंकि प्रकाशक को लगता है कि ये पुस्तकें नहीं बिकेंगी । मुझसे कहा गया था कि अपनी पुस्तक हिंदी में प्रकाशित कराने ले लिए मैं प्रायोजक लाऊँ । बाद में दूसरे प्रकाशक ने प्रकाशित की । दूसरी समस्या अच्छे अनुवादक की भी होती है । मेरी पुस्तक दो हिस्सों में भारत-गांधी के बाद और भारत-नेहरू के बाद के अनुवादक सुशांत झा हैं और मैं उनके काम से खुश हूँ ।"

इस बात में कोई संदेह नहीं कि अनुवादक मुश्किल है लेकिन वो बड़े लेखकों के हिंदी या अन्य भाषाओं में प्रकाशन को लेकर उत्साहित हैं । जानी मानी प्रकाशन कंपनी पेंग्विन ने हिंदी में प्रकाशन का बड़ा काम शुरून किया है ।

पेंग्विन के हिंदी प्रकाशन का काम देख रही रेणु अगाल बताती हैं, "हम हिंदी में अनुवाद के कार्य पर बहुत ध्यान दे रहे हैं । हमने नायपॉल, अमिताभ घोष और खालिद हुसैन को भी प्रकाशित किया है । कई बार भारतीय पृष्ठभूमि से अलग वाली पुस्तकें भी छापते हैं और लोग इसे पसंद करते हैं ।"

मसला केवल बड़े लेखकों की पुस्तकों तक सीमित नहीं है । कई प्रकाशन संस्थाएँ मैनेजमेंट से जुड़ी पुस्तकें, गंभीर लेख और कई अन्य सामग्रियाँ भी हिंदी में छाप रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि लोग ये पुस्तकें पढ़ते हैं । अंग्रेज़ी के लेखकों की रुचि हिंदी में बढ़ी है और प्रकाशकों की भी । ऐसे में सबसे फ़ायदे में हिंदी का पाठक वर्ग ही होगा क्योंकि अब उसके पास बड़े लेखकों को भी हिंदी में पढ़ने का मौका होगा ।

हिंदी साहित्य संगम का लोकार्पण समारोह

7 अक्टूबर को हिंदी साहित्य संगम की ओर से मिलन विहार में कवि गोष्ठी एवं लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की शुरूआत माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करके की गई । इसके बाद कवि गोष्ठी में रचनाकारों ने काव्यपाठ किया । कार्यक्रम में मुरादाबाद साहित्यकार दूरभाष निर्देशिका का लोकार्पण किया गया । दूरभाष निर्देशिका मुरादाबाद के 62 साहित्यकारों के मोबाइल एवं टेलिफ़ोन नम्बरों तथा पतों का संकलन है, जिन्हें योगेन्द्र वर्मा ने संकलित किया है। कार्यक्रम में विकास मुरादाबादी, रामसिंह नि:शंक, योगेन्द्र वर्मा, यू.पी.सक्सेना, विजयसिंह, रामदत्त द्विवेदी, रघुराज सिंह निश्चल, ओमकार सिंह, गिरीश चंद्र गुप्ता आदि ने काव्यपाठ किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ.महेश दिवाकर ने की । कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र कुमार जौली ने किया

साभार : http://sahityambd.blogspot.com

हिंदी विश्व मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है । हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की मान्य छह भाषाओं अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पैनिश, रूसी, चीनी और अरबी के बाद सातवीं आधिकारिक भाषा बनाए जाने का आग्रह प्रबल रूप से किया जा रहा है । संभावनाएँ अनंत हैं, प्रयास जारी हैं, आशान्वित बने रहना हमेशा अच्छा है !

विजया सती

स्व.श्री भवानी प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व पर एकाग्र जन्म शताब्दी समारोह

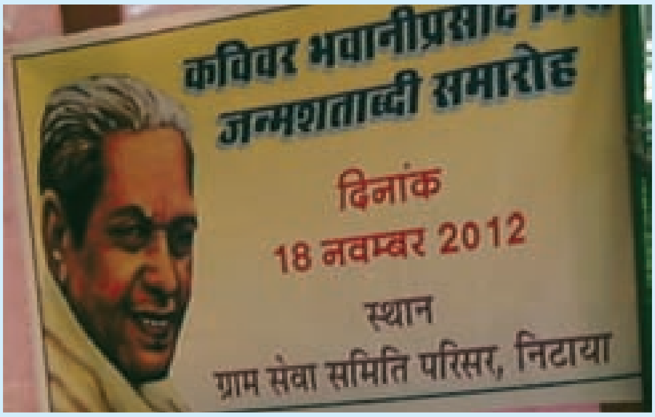

खयात कवि स्व.श्री भवानी प्रसाद मिश्र के जन्म शताब्दी समारोह वर्ष के अंतर्गत इटारसी के पास ग्राम निटाया में विशेष समारोह का आयोजन किया गया । समारोह में उनके परिवार के सदस्य, मित्र, साहित्यकार, लेखक, पत्रकार व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे । इस ग्राम में मिश्र जी अपने बचपन के मित्र स्व.वनवारीलाल जीचौधरी के साथ कई दिनों तक रहा करते थे । कार्यक्रम में मिश्र जी पर एकाग्र आठ खंडों के संपादक, वरिष्ठ आलोचक, समीक्षक, संपादक व विचारक श्री विजयबहादुर सिंह व वरिष्ठ कवि व प्रोफ़ेसर श्री प्रेमशंकर रघुवंशी विशेष रूप से उपस्थित थे ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में उनके परिवार के सदस्यों, मित्रों, साहित्यकारों,लेखकों,पत्रकारों व नागरिकों की उपस्थिति में मिश्र जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए । डॉ.विजयबहादुर सिंह, श्री प्रेमशंकर रघुवंशी ने इस अवसर पर अपनी भावनाएँ भवानी प्रसाद मिश्र व उनके परम मित्र वनवारी लाल जी चौधरी के चित्र पर माल्यार्पण द्वारा व्यक्त की । इसके पश्चात समारोह के आयोजन व कार्यक्रम की रूपरेखा समाज सेवक सुरेश दीवान द्वारा प्रस्तुत की गई । ख्यात आलोचक श्री विजयबहादुर सिंह को समारोह का अध्यक्ष तथा श्री रघुवंशी को मुख्य अतिथि बनाया गया ।

कार्यक्रम को जारी रखते हुए डॉ.आरती के संपादन में प्रकाशित साहित्यिक मासिकी 'समय के साखी' तथा इटारसी से प्रकाशित प्रतिष्ठित समाचार पत्र

स्वर्गीय श्री भवानी प्रसाद मिश्र को श्रद्धांजलि अर्पित करते डॉ.विजय बहादुर सिंह

'नगरकथा' के भवानी भाई पर एकाग्र अंकों का विमोचन किया गया । कार्यक्रम के संयोजक वरिष्ठ लेखक व समीक्षक श्रीकश्मीर उल्लप ने मिश्र जी के जीवन से जुड़ी कुछ बातें आमजन से साझा की । ग्रामीण द्वारका प्रसाद पटेल के साथ ही राकेश दीवान, अभय मिश्र, सुरेश मिश्र, रघुराज सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता सुशील आदि ने अपने विचार रखे । अशोक मिश्र ने भवानी भाई के बड़े पुत्र अनुपम मिश्र के पत्रों का वाचन किया । प्रो.हंसा व्यास ने मिश्र जी द्वारा 26 सितंबर 1944 में लिखा गीत गाकर सुनाया ।

ख्यात कवि प्रेमशंकर रघुवंशी ने मिश्र जी की कविता 'शांति के स्वर' की रचना प्रक्रिया, संवेदना तथा शिल्प के आधार पर उनके समग्र कवित्व पर विचार करते हुए स्पष्ट किया कि वे एक सौम्य गांधीवादी कवि थे ।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ.विजयबहादुर सिंह ने कहा कि देश को आज़ाद करने के लिए राजनीति में जो कार्य गांधी जी कर रहे थे, उस वक्त वही कार्य साहित्य में मिश्र जी कर रहे थे । वे असाधारण,अमूल्य व अद्वितीय कवि थे । उनकी कविता के प्रत्येक शब्द को वाक्य मानकर उसपर विचार किया जाना चाहिए । कल्पना के जो विविध प्रयोग मिश्र जी के यहां मिलते हैं,वे अन्यत्र दुर्लभ हैं । हिंदी साहित्यजगत में उनके जैसा प्रतिबद्ध कवि कोई दूसरा नहीं है ।

समारोह में इ-समीक्षक, लेखक व साहित्यकार अखिलेश शुक्ल, कवि श्रीराम निवारिया, सुरेंद्र चौधरी, नर्मदा प्रसाद सिसोदिया, बृजकिशोर पटैल, दीपाली शर्मा एवं अन्य साहित्यकार, लेखक आदि विशेष रूप से उपस्थित थे ।

अखिलेश शुक्ल की रिपोर्ट

श्रद्धांजलि

पं.रविशंकर

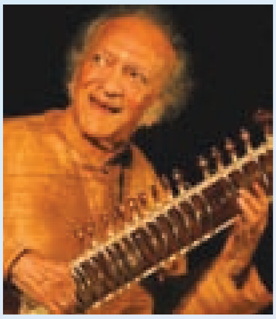

विश्व-विख्यात सितार वादक पंडित रविशंकर का सैन डियागो के एक अस्पताल में 12 दिसंबर को निधन हो गया । वे 92 वर्ष के थे और पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे । 7 दिसंबर को उनका ऑपरेशन किया गया था । 1999 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था । 1920 को वाराणसी में जन्मे पं.रविशंकर बचपन से ही संगीत के माहौल में पले-बढ़े और अनेक तरह के वाद्य यंत्रों के प्रति उनकी रुचि रही । पं.रविशंकर को देश-विदेश के कई बड़े सम्मानों से सम्मानित किया गया । इन्हें मशहूर अंतर्राष्ट्रीय सम्मान ग्रैमी अवार्ड तथा मैग्सेसे अवार्ड से भी नवाज़ा गया ।

पं.रविशंकर 1986 से 1992 तक राज्यसभा के सदस्य भी रहे । उन्होंने 'धरती के लाल' और 'नीचा नगर' जैसी फ़िल्मों में संगीत भी दिया । मोहम्मद इकबाल के 'सारे जहां से अच्छा...' की धुन भी पं.रविशंकर की बनाई हुई है । वर्ष 1966 पं.रविशंकर के लिए बेहद अहम रहा, क्योंकि इसी साल प्रसिद्ध संगीत ग्रुप 'बीटल्स' के सदस्य जॉर्ज हैरिसन उनके शिष्य बने । इसके बाद पं.रविशंकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहद विख्यात हुए । पं.रविशंकर के निधन से अंतर्राष्ट्रीय संगीत जगत शोक में डूब गया है ।

राहुल शर्मा की रिपोर्ट

अभिनेता दिनेश ठाकुर

जयपुर के आमेर में जन्मे प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार व निर्देशक दिनेश ठाकुर का मुंबई में निधन हो गया । 70 के दशक में हिंदी फ़िल्मों में कई चरित्र भूमिकाएँ अदा कर चुके ठाकुर को गुर्दे की बीमारी थी । वे 65 वर्ष के थे । मेरे अपने, रजनीगंधा, घर जैसी फ़िल्मों में चरित्र भूमिकाएँ निभा चुके ठाकुर तीन दशक से थिएटर ग्रुप 'एएनके प्रोडक्शन्स' के मुखिया थे । उनका 'जिन लाहौर नही वेख्या' आज भी लोकप्रिय है । गए साल उन्होंने नातक 'रंग बजरंग' पृथ्वी और टाटा थिएतरों में पेश किया था । ठाकुर आजीविका के लिए रंगमंच पर निर्भर रहे । मुंबई में फ़िल्मों में व्यस्त होने के बावजूद थिएटर के लिए समय निकालते थे ।

संपादकीय

'हिंदी के मूल्य और हिंदी का मूल्य'

गत 13 नवंबर को दीपावली मनाई गई । ऐसे अवसरों पर सबसे अधिक यातायात होता है फ़ोन और एसएमएस के गलियारों में जहाँ अपने संदेशों के अटक जाने के डर से मित्र और संबंधी पर्व की पूर्वसंध्या से ही अथवा रात के बारह बजे तिथि बदलते ही संदेश भेजना आरंभ कर देते हैं । मेरे पास जो पहला संदेश आया उसमें मुझे परिवार सहित "हैपी दीवाली" "विश" किया गया ।

दीपावली के पहले संदेश ने ही मन में अनिर्वचनीय खीज उत्पन्न कर दी । दीपावली जैसा पर्व अर्थात, 'एक पुत्र द्वारा अपने पिता के वचन की रक्षा के लिए चौदह वर्षों तक वनवास स्वीकारना, असुविधाओं के बीच धर्म की रक्षा का अपना कर्तव्य निभाना, अधर्म पर विजय प्राप्त करना, अथवा दीपों का प्रतीकात्मक व आध्यात्मिक संदेश' इन सब के समक्ष अथवा इन सब की शुभकामना के लिए 'हैप्पी' शब्द कितना छोटा, कितना फीका पड़ जाता है । निःसंदेह अपने पर्व के साथ जुड़े मूल्यों का संवहन करने की योग्यता जितनी अपनी भाषा में होती हैं उतनी अन्य भाषा में नहीं । इस प्रकार के चिंतन के साथ दीपावली के दिन की शुरूआत हुई ।

परंतु धीरे-धीरे इस खीज के अंधकार को तर्क के दीपों ने दूर किया ।

12-14 वर्ष पहले का वह समय याद आया जब ई-मेल से होली-दीपावली के पहले बने बनाए ई-कार्ड मित्रों को भेजे थे । न हिंदी में सही रूप से टंकन आता था न अधिकतर कार्ड पर हिंदी में कुछ लिखा होता था । अधिक से अधिक ॐ का चिह्न बना होता था और मंत्र तक रोमन लिपि में लिखे होते थे । जो कंपनियाँ वे कार्ड बना रही थीं, जो आई.टी. विशेषज्ञ उनको डिज़ाइन कर रहे थे, सभी का प्रशिक्षण "हैप्पी" वाली भाषा में हो रहा था, "मंगलकामना" वाली भाषा में नहीं । उन दिनों देवनागरी में टंकन के लिए 'सुलभ' उपकरण भी अत्यंत सीमित दायरे में काम कर पाते थे । मोबाइल पर हिंदी... बात को छोड़ते ही नहीं हैं ।

प्रौद्योगिकी की रेल 'सुपरसोनिक' गति से यात्रा आरंभ कर चुकी थी । हिंदी और देवनागरी पहली ट्रेन में जगह नहीं पा सके थे । स्वाभाविक था कि इसके परिणामस्वरूप एलैक्ट्रॉनिक माध्यमों में जहाँ-जहाँ देवनागरी को होना था उसकी जगह रोमन लिपि ने ले ली थी और एक बार लिपि आई तो भाषाओं का भी स्थानांतरण हो गया । इसके अन्य अनेक परिणामों के बीच होली, दिवाली, ईद, कावड़ी, वसंत उत्सव, लोहरी सब "हैप्पी" के 'युनीफॉर्म' साँचे में ढल गए । बाज़ार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में "हैप्पी" वाली भाषा ने अन्य भाषाओं की तुलना में प्रगति अधिक तीव्रता से की और आधुनिक तीव्र माध्यमों का सहारा लेकर सार्वभौमिकता का भ्रम उत्पन्न किया जिसकी धारा में सब बहने लगे ।

डिजिटल क्रांति के आरंभ से ही देश-देश के बीच, एक देश के अनेक आर्थिक तबकों के बीच और पुरानी और नई पीढ़ी के बीच 'डिजिटल डिवाइड' की बात बहुत की जाती है । इसका एक महत्वपूर्ण और भाषाविदों के लिए विचारप्रेरक आयाम यह भी है कि विश्व भर में सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा अंग्रेज़ी को मुख्य माध्यम बनाने के फलस्वरूप विश्व की भाषाओं के बीच जो डिजिटल डिवाइड उत्पन्न हुआ उससे अन्य अनेक परिणामों के बीच सांस्कृतिक समरूपतावाद और एकभाषावाद को सर्वाधिक ऊर्जा मिली । 'शुभकामना' और 'मुबारक' का स्थान 'हैप्पी' ने लेना शुरू किया और वह 'हैप्पी' डिजिटल क्षेत्र से घरों में प्रवेश करने लगी ।

सौभाग्य से अब यह खाई पाटी जा रही है ।

यह सकारात्मक शाब्दिक सांत्वना नहीं है । दीपावली के सैकड़ों एसएमएस संदेशों में कई संदेश देवनागरी में भी आए और ऐसे संदेश मॉरीशस से भी आए । ईलेक्ट्रॉनिक संदेशों में ईमेल से लेकर अत्यंत आकर्षक और सब तरह के एनिमेशन से भरपूर कार्ड तक देवनागरी में प्राप्त हुए । और जब देवनागरी में संदेश आए तो उनमें सटीक चित्रों, संदेशों आदि के साथ 'शुभकामनाएँ' भी आईं । यही प्रवृति अब अन्य त्योहारों के संदर्भ में भी उभरकर आ रही है । त्योहारों जैसी विशेष परिस्थितियों के अतिरिक्त अब दैनिक क्रियाकलापों व इलेक्ट्रॉनिक संप्रेषण में देवनागरी दिखने लगी है । अमिताभ बच्चन अपने फेसबुक पृष्ठ पर अपने पिता की कविताएँ और अपने अनुभव देवनागरी में लिख रहे हैं और घंटों में लाखों 'लाईक' मिल रहे हैं ।

कहने का तात्पर्य स्पष्ट है : हिंदी भाषा ने जब नए माध्यम में प्रवेश किया तब अन्य भाषाओं के पास उपलब्ध या विकसित उपकरणों की तुलना में वह कमज़ोर थी । अब उसके पास भी उतने ही विकसित और विकासशील उपकरण उपलब्ध हो रहे हैं तो हिंदी इस क्षेत्र में अपनी गति बढ़ा रही है । यूनिकोड में हिंदी टंकन सॉफ्टवेयर आदि के साथ देवनागरी की अच्छी मित्रता तो अब पुरानी सी बात लगने लगी है । अब तो टाबलैट कंप्यूटर और फ़ोन के लिए एप्लिकेशन की भरमार है और जैसा कि आप इसी सूचनापत्र में पढ़ चुके हैं, हिंदी में मोबाइल बैंकिंग की सेवाएँ करोड़ों तक पहुँच रही हैं ।

अब आवश्यकता है हिंदी से जुड़े हर एक व्यक्ति के योगदान की । बाज़ार में पैसे की लाठी चलती है – सब जानते हैं । अर्थात भाषा में मूल्य होने मात्र से वह बाज़ार में चल जाए यह आवश्यक नहीं है । बाज़ार में भाषा का मूल्य भी होना आवश्यक है । मूल्य बनता है ग्राहक से और हम एक दो नहीं, एक अरब ग्राहक हैं । बाज़ार ने दीपावली के कार्ड से लेकर मोबाइल बैंकिंग तक हिंदी की मूल्य क्षमता की जाँच के लिए अपने पैसे लगा दिए हैं । अब हिंदी सेवी को हिंदी में सेवाओं का 'ग्राहक' बनकर इस बात का विश्वास दिलाना है कि हिंदी से भी मुनाफ़ा हो सकता है । कि 'दीपावली' की शुभकामनाएँ 'हैप्पी दिवाली' से अधिक फ़ायदेमन्द है । इसके लिए मार्ग मूलभूत अर्थशास्त्रीय है – डिमाण्ड करें, प्रयोग करें, सप्लाय अपने आप होगी ।

हिंदी के सप्लाय से आपकी भाषा का मूल्य बढ़ेगा । मूल्य बढ़ेगा तो दीपावली में आपकी भाषा आएगी और आपकी भाषा के साथ आएँगे आपके मूल्य ।

वर्ष 2013 की शुभकामनाएँ ।

गंगाधरसिंह सुखलाल
उपमहासचिव

विश्व हिंदी सचिवालय में हिंदी साहित्यकार डॉ.अभिमन्यु अनत का आगमन

डॉ.अभिमन्यु अनत को पत्रिका भेंट करती श्रीमती पूनम जुनेजा ।

मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.अभिमन्यु अनत तथा महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग में वरिष्ठ व्याख्याता श्री कुमारदत्त गुदारी ।

प्रधान सपादक
श्रीमती पूनम जुनेजा
संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, श्रीमती विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 676 1196
Fax (230) 676 1224
E-mail : info@vishwahindi.com
Website : www.vishwahindi.com
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul - Pailles
Tel: 208 1317